मूल्य 1 रुपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

कृषक समाचार की 32,000 प्रतियां सन् 1960 से हर महीने छापकर सदस्यों को भेजी जाती हैं

वर्ष 67 | फरवरी, 2022 | अंक 02 | कुल पृष्ठ 8

शोक सन्देश

भारत कृषक समाज श्री बूटा सिंह बाजवा जी, उपाध्यक्ष, भारत कृषक समाज के निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है, उनका निधन 5 जनवरी 2022 को हुआ।

वे भारत कृषक समाज के बहुत ही प्रगतिशील एवं सक्रिय सदस्य थे, वह कृषक समुदाय के एक समर्पित संगठनकर्ता थे और साथी किसानों की समस्याओं को दूर करने के लिए मूल्यवान मार्गदर्शन और सलाह प्रदान करने के लिए हमेशा उपलब्ध रहते थे।

हम प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति मिले तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो।

आर्थिक वृद्धि और समावेशी विकासः क्या एक नए ग्रोथ मॉडल की जरूरत है?

प्रो. रमेश चंद

(प्रोफेसर रमेश चंद, सदस्य, नीति आयोग, उनके द्वारा भोपाल स्थित अटल बिहारी वाजपेयी इंस्टीट्यूट ऑफ गुड गवर्नेंस एंड पॉलिसी एनालिसिस में इंडियन इकोनॉमिक एसोसिएशन के 104वें सालाना कांफ्रेंस में किए गए संबोधन। उनके भाषण की कुछ मुख्य बिंदु।)

कृषि को केंद्र में रखकर नीति बनाने से टिकाऊ और समावेशी विकास संभवः

अर्थशास्त्री जॉनसन और मेलर ने 1961 में कहा था कि विकास के अगुआ के तौर पर कृषि केंद्रीय भूमिका निभाती है, खासकर औद्योगीकरण के शुरुआती चरण में। बाद में दूसरे अर्थशास्त्रियों ने भी आधुनिक सेक्टर के रूप में उभरने और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने में कृषि की भूमिका को स्वीकार किया। उसके बाद अर्थशास्त्रियों ने कृषि के विकास के गैर-कृषि क्षेत्र पर असर और दोनों के बीच संबंधों को भी पहचाना। कृषि क्षेत्र आर्थिक विकास में कई तरह से योगदान करता है- कृषि में इस्तेमाल होने वाले इनपुट की मांग के तौर पर, इंडस्ट्री को कच्चे माल की सप्लाई देकर और उद्योगों द्वारा तैयार सामान की ग्रामीण इलाकों में मांग पैदा करके।

यह जानना बड़ा रोचक है कि आर्थिक विकास के पारंपरिक और आधुनिक, दोनों सिद्धांतों में आर्थिक बदलाव की प्रकृति पर जो निष्कर्ष निकाला गया है, उनमें काफी समानताएं हैं। सभी डेवलपमेंट अर्थशास्त्री इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि प्रति व्यक्ति आय बढ़ने पर जीडीपी और रोजगार में कृषि का हिस्सा घटता है। औद्योगिक देशों तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में इस बात के उदाहरण मिलते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में यह पैटर्न बदला है।

टिमर (2009) के अनुसार कुल श्रम बल में कृषि श्रमिकों के हिस्से की तुलना में जीडीपी में कृषि का हिस्सा ज्यादा तेजी से घटता है। ब्रूस गार्डनर (2002) ने लिखा कि कृषि और गैर-कृषि क्षेत्र की आमदनी के बीच समानता के लिए जरूरी है कि कृषि श्रमिकों को गैर-कृषि क्षेत्र में तेजी से जोड़ा जाए। लेकिन इसमें काफी वक्त लगेगा। हाल के वर्षों में

जीडीपी और रोजगार में कृषि के हिस्से के बीच समानता की गति और धीमी पड़ गई है, क्योंकि औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर गैर-कृषि क्षेत्र की जीडीपी वृद्धि दर की तुलना में कम हैं। भारत, चीन, वियतनाम जैसे देशों में कृषि और गैर-कृषि क्षेत्र के श्रमिकों के बीच की आमदनी में अंतर लगातार बना हुआ है।

आज सभी देशों में रोजगार सबसे गंभीर चुनौती है। रोबोटिक, मशीन लर्निंग, ऑटोमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे तकनीकी विकास श्रम सघन के बजाय पूंजी सघन उत्पादन को बढ़ावा देते हैं। इसलिए आधुनिक ग्रोथ को कुछ अर्थशास्त्री 'जॉबलेस ग्रोथ' भी कहते हैं।

मैंने 2004-05 से 2011-12 के दौरान ग्रामीण जीडीपी और ग्रामीण रोजगार के बीच बदलाव की तुलना करने के लिए एक अध्ययन किया। इस अवधि में ग्रामीण भारत में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की जीडीपी सालाना 15.87 फ़ीसदी की दर से बढ़ी। इसके विपरीत उद्योगों में रोजगार की वृद्धि सिर्फ 0.67 फ़ीसदी हुई। यहां यह सवाल उठता है कि पूंजी सघन की जगह श्रम सघन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इंसेंटिव क्यों नहीं दिया जाता है। इसमें एक समस्या प्रतिस्पर्धी क्षमता की है। आज विश्व अर्थव्यवस्था में इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है।

फूड प्रोसेसिंग इसका अच्छा उदाहरण है। इस सेक्टर को दो भागों में बांटा जा सकता है- संगठित और असंगठित। संगठित का मतलब पूंजी सघन वाली आधुनिक फैक्ट्रियां हैं और असंगठित में छोटे और लघु उद्यम आते हैं। संगठित क्षेत्र में इस सेक्टर के 20 फ़ीसदी लोग काम करते हैं लेकिन उत्पादन 80 फ़ीसदी होता है। इसके विपरीत असंगठित क्षेत्र में इस सेक्टर के 80 फ़ीसदी लोग काम करते हैं लेकिन उत्पादन में उनका हिस्सा सिर्फ 20 फ़ीसदी है। यही कारण है कि असंगठित क्षेत्र तेजी से सिकुड़ रहा है। रोजगार पर इसका असर आसानी से समझा जा सकता है।

क्या हमें कम आय वाली अर्थव्यवस्था के विकास के शुरुआती चरण में कृषि को केंद्र में रखकर विकास का मॉडल बनाना चाहिए और उसके बाद औद्योगीकरण में तेजी लानी चाहिए? क्या यह मॉडल भारत जैसे विकासशील देशों के लिए बेहतर होगा?

सिद्धांत स्तर पर देखा जाए तो कृषि की अगुवाई में आर्थिक बदलाव हो, इसके लिए बायोटेक्नोलॉजी जैसे कृषि विज्ञान में इनोवेशन जरूरी है। मैं यह भी मानता हूं कि डिजिटल टेक्नोलॉजी का नौकरियों पर जो विपरीत प्रभाव पड़ा है

उसका मुकाबला प्लांट बायोटेक्नोलॉजी से किया जा सकता है। हरित क्रांति की टेक्नोलॉजी, जो विकासशील देशों को 1960 के दशक के मध्य में मिली, उसे लुइस मॉडल का पहला विभेद कहा जा सकता है। इसका कारण कृषि क्षेत्र में तेज विकास के कारण होने वाला बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज है।

भारत में विकास का पहला चरण हरित क्रांति लेकर आया। 1991-92 में शुरू हुए आर्थिक सुधारों से विकास का दूसरा चरण आया और 2003-04 के आसपास आईटी और आईटी इनेबल्ड सर्विसेज में क्रांति से तीसरा चरण आया है। इन तीनों चरणों में कृषि, गैर-कृषि और पूरी अर्थव्यवस्था में विकास की दर एक रोचक तथ्य बताती है। 1950-51 से 1966-67 (हरित क्रांति से पहले) तक कृषि क्षेत्र की सालाना वृद्धि दर 1.77 फ़ीसदी और गैर-कृषि क्षेत्र की 5.5 फ़ीसदी थी। तब पूरी अर्थव्यवस्था की औसत विकास दर 3.41 फ़ीसदी थी। हरित क्रांति के बाद कृषि क्षेत्र की विकास दर 1991-92 तक औसत 3.02 फ़ीसदी रही। 1991 में आर्थिक सुधारों के बाद कृषि की विकास दर में थोड़ी गिरावट आई, लेकिन गैर-कृषि क्षेत्र की विकास दर 7.01 फ़ीसदी हो गई। कृषि में गिरावट के बावजूद अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 5.73 फ़ीसदी थी। यह मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को समर्थन देने वाली नीतियों के चलते संभव हुआ।

2003-04 से 2019-20 तक कृषि और गैर-कृषि दोनों क्षेत्रों में वृद्धि दर तेज रही। इससे पूरी अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर भी बढ़कर 6.71 फ़ीसदी जा पहुंची। यह ट्रेंड बताता है कि अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर तेज करने और प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में कृषि क्षेत्र ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और साथ ही इसने गरीबी कम करने में भी मदद की।

पिछड़े राज्य पहले कृषि और फिर उद्योग को मजबूत करें, इससे विकास टिकाऊ और समावेशी होगा:

विकास के एजेंडे में कृषि की अग्रणी भूमिका को लेकर पूरी दुनिया में एक नया विचार उभर रहा है। अब इसे अपनाना हमारे ऊपर है कि हम औद्योगीकरण में कृषि की भूमिका देखते हैं या विकास के लिए कृषि को अपनाते हैं। राज्यों को कृषि की क्षमता की अनदेखी करके विकास के लिए औद्योगीकरण के पीछे नहीं भागना चाहिए। जिन राज्यों में कृषि उत्पादकता कम है उन्हें कृषि को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। उसके बाद उद्योग और सर्विस सेक्टर को चुनना चाहिए। इससे विकास समावेशी तो होगा ही, विकास दर और लोगों की आमदनी

में वृद्धि भी स्थायी होगी।

भारत में विकास को कई चरणों में बांटा जा सकता है। हर चरण की अलग खासियत रही है। राज्यों के विकास पर नजर डालने पर हमें उनमें कई पैटर्न देखने को मिलते हैं। यहां हम उन पैटर्न की चर्चा करने के साथ यह भी देखेंगे कि उनमें कौन सा पैटर्न सबसे मुफीद है, और जो राज्य अभी तक विकास की परिधि से बाहर हैं, उन्हें कौन सा तरीका अपनाना चाहिए।

हरित क्रांति के साथ विकास की पहली लहर को शुरू में पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश के डेल्टा क्षेत्र और तमिलनाडु ने अपनाया। दूसरे राज्यों के उन इलाकों में भी इसे अपनाया गया जहां सिंचाई के बेहतर साधन थे। इसका राज्य की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक असर हुआ। गैर कृषि क्षेत्र को भी फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज से फायदा मिला। 1991 के आर्थिक सुधारों का सबसे अधिक असर महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु और हरियाणा में देखने को मिला। इससे महाराष्ट्र 1990 के दशक के मध्य तक सबसे अधिक प्रति व्यक्ति आय वाला राज्य बन गया। प्रमुख राज्यों में जब आईटी और अन्य सर्विसेज सेक्टर में विकास का चरण आया तो उसका भी सबसे अधिक फायदा महाराष्ट्र, हरियाणा, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश ने अन्य राज्यों की तुलना में ज्यादा उठाया। इसकी वजह से कर्नाटक 2015-16 में हरियाणा के बाद दूसरा सबसे अधिक प्रति व्यक्ति आय वाला राज्य बन गया।

यहां विकास के अलग अलग पैटर्न देखने को मिलते हैं। पहला पैटर्न है हरित क्रांति टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके, कृषि को केंद्र में रखते हुए विकास का मॉडल अपनाना। यह मॉडल समावेशी था और इसने काफी हद तक गरीबी को भी कम किया। अगर कृषि के बाद औद्योगिक विकास ना होता तो वह ग्रोथ भी टिकाऊ नहीं होता। इसका अच्छा उदाहरण पंजाब है जो हरित क्रांति के दौरान 1994-95 तक प्रति व्यक्ति आय में सबसे ऊपर था और हाल में इसमें गिरावट आई। दूसरा पैटर्न कृषि की अगुवाई में बदलाव और उसके बाद औद्योगीकरण है। यह मॉडल समावेशी होने के साथ टिकाऊ भी है। हरियाणा इसका अच्छा उदाहरण है। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश ने भी इस मॉडल को अपनाया लेकिन उन्होंने कृषि टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कम किया। विकास का यह मॉडल सबसे अच्छा कहा जा सकता है। हरियाणा 2003-04 से प्रति व्यक्ति आय में शीर्ष पर है। वहां गरीबी भी राष्ट्रीय औसत का आधा है।

तीसरा पैटर्न विकास के लिए उद्योगों

पर फोकस करने का है। यह मॉडल तेज विकास तो देता है लेकिन वह समावेशी नहीं होता। महाराष्ट्र इसका बड़ा उदाहरण है, और कुछ हद तक गुजरात भी। महाराष्ट्र में ज्यादातर विकास औद्योगिक क्षेत्रों और पुणे और मुंबई के आसपास हुआ है। राज्य के बाकी हिस्से में प्रति व्यक्ति आय महाराष्ट्र के औसत से कम है। प्रति व्यक्ति आय में शीर्ष तक जाने के बावजूद यहां तमिलनाडु की तुलना में गरीबी घटने की दर कम है।

चौथा पैटर्न सर्विस सेक्टर और आईटी सेक्टर की अगुवाई में ग्रोथ का है। कर्नाटक इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। उसके बाद आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र हैं। कर्नाटक में सर्विसेज और आईटी सेक्टर की ग्रोथ बेंगलुरु और मैसूर के इर्द-गिर्द है। बाकी कर्नाटक में ऐसा बदलाव नहीं दिखता। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की तुलना में गरीबी हटाने में कर्नाटक भी पीछे है।

राज्यों के विकास के पैटर्न से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कृषि की अगुवाई में ग्रोथ समावेशी तो है लेकिन अगर उसके बाद औद्योगीकरण न किया जाए तो वह टिकाऊ नहीं होता। कृषि की अगुवाई में ग्रोथ और उसके बाद औद्योगीकरण से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि और गरीबी में गिरावट स्थाई होती है। उद्योग की अगुवाई में विकास, जिसमें पहले कृषि का विकास ना हुआ हो, उससे अर्थव्यवस्था की गति और प्रति व्यक्ति आय तो बढ़ेगी लेकिन वह समावेशी नहीं होगा। सर्विस सेक्टर की अगुवाई में होने वाला ग्रोथ चुनिंदा इलाकों तक सीमित रहेगा।

ये नतीजे बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे राज्यों के लिए मायने रखते हैं। इन राज्यों को कृषि विकास को शीर्ष वरीयता देनी चाहिए। इससे समावेशी विकास की मजबूत जमीन तैयार होगी। उसके बाद उन्हें उद्योगों पर और तीसरे नंबर पर सर्विस सेक्टर पर ध्यान देना चाहिए। अगर इस क्रम का पालन नहीं किया गया तो समावेशी और टिकाऊ विकास के लक्ष्य को हासिल करना मुश्किल होगा। औद्योगिक या सर्विस सेक्टर में ऊंची विकास दर से समावेशी विकास ना होने का प्रमुख कारण इन दोनों सेक्टर में इस्तेमाल की जाने वाली टेक्नोलॉजी है। इन दोनों सेक्टर में पूंजी सघन टेक्नोलॉजी का अधिक इस्तेमाल किया जाता है और इससे श्रमिकों को हटाना पड़ जाता है।

मेरे विचार से आर्थिक विकास का संदर्भ अब बदल गया है। अब रोजगार, टिकाऊ विकास, पर्यावरण, गरीबी, पोषण, स्वास्थ्य हमारे लिए बड़ी चिंता

के विषय बन गए हैं। इस बदले हुए संदर्भ में कृषि बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। खेती में प्राकृतिक संसाधनों का प्रचुर इस्तेमाल होता है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश में 80 से 90 फीसदी पानी का इस्तेमाल खेती में ही होता है, जबकि वैश्विक औसत 70 फीसदी है। फिर भी खेती का आधा इलाका असिंचित है। बाढ़ सिंचाई के कारण देश में 30-35 फीसदी पानी का ही इस्तेमाल हो पाता है। सभी राज्यों में भूजल स्तर गिर रहा है। शहरों में वर्षा जल संचय और पानी की रिसाइक्लिंग से बहुत लाभ नहीं होने वाला। वास्तविक फर्क तो खेती में पानी के उचित इस्तेमाल से पड़ेगा।

खेती के कार्यों में निकलने वाली ग्रीनहाउस गैसों के बारे में भी कोई चर्चा नहीं होती है। मिट्टी में ऑर्गेनिक और इनऑर्गेनिक इनपुट के प्रयोग, बायोमास के सड़ने, फसल उत्पादन, मवेशियों आदि से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। भारत में ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कृषि का हिस्सा 17 फीसदी है, इतना ही योगदान यह क्षेत्र जीडीपी में भी करता है। इसमें से तीन-चौथाई उत्सर्जन धान की खेती और मवेशियों से होता है, बाकी 26 फीसदी उर्वरक से निकलने वाली नाइट्रस ऑक्साइड से। अगर पराली जलाने को भी शामिल किया जाए तो कुल ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कृषि का हिस्सा और अधिक होगा।

विकास के एजेंडे में कृषि की अग्रणी भूमिका को लेकर पूरी दुनिया में एक नया विचार उभर रहा है। अब इसे अपनाना हमारे ऊपर है कि हम औद्योगीकरण में कृषि की भूमिका देखते हैं या विकास के लिए कृषि को अपनाते हैं। राज्यों को कृषि की क्षमता की अनदेखी करके विकास के लिए औद्योगीकरण के पीछे नहीं भागना चाहिए। जिन राज्यों में कृषि उत्पादकता कम है उन्हें कृषि को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। उसके बाद उद्योग और सर्विस सेक्टर को चुनना चाहिए। इससे विकास समावेशी तो होगा ही, विकास दर और लोगों की आमदनी में वृद्धि भी स्थायी होगी।

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

RNI No. 831/1957 **प्रकाशन की तिथि : 1 फरवरी, 2022**
पोस्टल रजि० DL (S)-01/3092/2021-23 **एल.पी.सी., दिल्ली आर.एम.एस, दिल्ली–6,**
पहले भुगतान किये बिना पोस्ट करने का लाइसेंस नं. U(C)-92/2021-23 **तारीख 4 एवं 5, फरवरी 2022**

सार्वजनिक सूचना

भारत कृषक समाज के सदस्यों से अनुरोध है कि वे भारत कृषक समाज के महासचिव के कार्यालय के साथ अपने संपर्क विवरण को अद्यतन करें।

संपर्क विवरण निम्नलिखित प्रारूप में प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है:

नाम: _____

सदस्यता संख्या: _____

वर्तमान पता: _____

_____

टेलीफोन नंबर: _____

मोबाइल नंबर: _____

ईमेल: _____

(कृपया पते का सबूत की एक छायाप्रति संलग्न करें)

विधिवत भरा हुआ फॉर्म निम्नलिखित पते पर स्पीड पोस्ट या ईमेल दिनांक 30 नवंबर 2021 तक या उससे पहले जमा कराएं:

महासचिव
भारत कृषक समाज
ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली, 110013
ईमेल:– Samdarshi.bks@gmail.com
टेलीफोन:– 011–41402278

नोट: आपसे अनुरोध है कि आप अन्य सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए सूचित करे।

भारत कृषक समाज ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली– 110013, फोन: 011–41402278, 9667673186, ई–मेल: ho@bks.org.in, **वैबसाईट:** www.bks.org.in **के लिए श्री उरविन्द्र सिंह भाटिया द्वारा सम्पादित, मुद्रित व प्रकाशित तथा एवरेस्ट प्रेस, ई 49/8 ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली –110020 द्वारा मुद्रित।**